भक्ति की धाराएँ: विभिन्न संप्रदाय

भक्ति की दो धाराएँ प्रवाहित हुईं–निर्गुण धारा और सगुण धारा। निर्गुण और सगुण धारा में अंतर इस बात का नहीं है कि निर्गुणियों के राम गुणहीन हैं और सगुण मतवादियों के राम या कृष्ण गुण सहित। निर्गुण का अर्थ संतों के यहाँ गुणरहित नहीं, गुणातीत है। निर्गुण और सगुण मतवाद का अंतर अवतार एवं लीला की दो अवधारणाओं को लेकर है। निर्गुण मत के इष्ट भी कृपालु, सहृदय, दयावान, करुणाकर हैं, वे भी मानवीय भावनाओं से युक्त हैं, किंतु वे न अवतार ग्रहण करते हैं न लीला। वे निराकार हैं। सगुण मत के इष्ट अवतार लेते हैं, दुष्टों का दमन करते हैं, साधुओं की रक्षा करते हैं और अपनी लीला से भक्तों के चित्त का रंजन करते हैं। अत: सगुण मतवाद में विष्णु के 24 अवतारों में से अनेक की उपासना होती है, यद्यपि सर्वाधिक लोकप्रिय और लोक-पूजित अवतार राम एवं कृष्ण ही हैं।

निर्गुण एवं सगुण, दोनों प्रकार की भक्ति का मुख्य लक्षण है– भगवद्विषयक रति एवं अनन्यता। नाथ-सिद्धों के आसन-प्राणायाम, सहज-समाधि, शरीर, प्राण, मन, वाणी की अचंचलता का योग–सब इसी महाराग में विलीन हो गए हैं।

भक्ति के अनेक संप्रदाय हैं। उनमें से चार प्रमुख संप्रदायों और उनके आचार्यों का परिचय संक्षेप में दिया जा रहा है। ये हैं–श्री, ब्राह्म, रुद्र, सनकादि या निंबार्क।

1. **श्रीसंप्रदाय**– श्रीसंप्रदाय के आचार्य रामानुजाचार्य हैं। कहा जाता है कि लक्ष्मी ने इन्हें जिस मत का उपदेश दिया उसी के आधार पर इन्होंने अपने मत का प्रवर्तन किया। इसलिए इनके संप्रदाय को **श्रीसंप्रदाय** कहते हैं। इन्हीं की परंपरा में रामानंद हुए। रामानंद प्रयाग में उत्पन्न हुए थे। इनके गुरु

का नाम राघवानंद था। रामानंद संस्कृत के पंडित, उच्च कुलोत्पन्न ब्राह्मण थे, किंतु वे आकाशधर्मा गुरु थे। उन्होंने अवर्ण-सवर्ण, स्त्री-पुरुष, राजा-रंक सभी को शिष्य बनाया। उनका विचार था कि ऋषियों के नाम पर गोत्र और परिवार बन सकते हैं, तो ऋषियों के भी पूजित परमेश्वर के नाम पर सब का परिचय क्यों नहीं दिया जा सकता! इस प्रकार सभी भाई-भाई हैं, सभी एक जाति के हैं। श्रेष्ठता भक्ति से होती है, जाति से नहीं। इनके जो बारह शिष्य प्रसिद्ध हुए वे हैं– रैदास, कबीर, धन्ना, सेना, पीपा, भावानंद, नरहर्यानंद, सुखानंद, अनंतानंद, सुरसुरानंद, पद्मावती और सुरसुरी। रामानंद के रचनात्मक व्यक्तित्व का अत्यंत महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि उन्होंने हिंदी को अपने मत के प्रचार का माध्यम बनाया।

2. **ब्राह्म संप्रदाय**– ब्राह्म संप्रदाय के प्रवर्तक मध्वाचार्य थे। उनका जन्म गुजरात में हुआ था। चैतन्य महाप्रभु पहले इसी संप्रदाय में दीक्षित हुए थे। इस संप्रदाय का सीधा संबंध हिंदी साहित्य से नहीं है।
3. **रुद्र संप्रदाय**– इसके प्रवर्तक विष्णुस्वामी थे। वस्तुतः यह महाप्रभु वल्लभाचार्य के पुष्टि संप्रदाय के रूप में हिंदी में जीवित है। जिस प्रकार रामानंद ने 'राम' की उपासना पर बल दिया था, उसी प्रकार वल्लभाचार्य ने 'कृष्ण' की उपासना पर बल दिया। उन्होंने प्रेमलक्षणा भक्ति ग्रहण की। भगवान के अनुग्रह के भरोसे नित्यलीला में प्रवेश करना जीव का लक्ष्य माना। सूरदास एवं अष्टछाप के कवियों पर इसी संप्रदाय का प्रभाव है।

   वल्लभाचार्य ने देश का काफ़ी भ्रमण किया था। वे महान विद्वान एवं दार्शनिक थे। उनका व्यक्तित्व अत्यंत लोकप्रिय एवं मानवीय रहा होगा। उनके जीवन की जो बातें इधर-उधर बिखरी मिलती हैं, उनसे लगता है कि मानव-मन में उनकी गहरी पैठ रही होगी।
4. **सनकादि संप्रदाय**– यह निंबार्काचार्य द्वारा प्रवर्तित है। हिंदी भक्ति साहित्य को प्रभावित करने वाले राधावल्लभी संप्रदाय का संबंध इसी से जोड़ा जाता है। राधावल्लभी संप्रदाय के प्रवर्तक गोसाईं हितहरिवंश का जन्म 1502 में मथुरा के पास बाँदगाँव में हुआ। कहा जाता है कि हितहरिवंश पहले माध्वानुयायी थे। इसमें राधा की प्रधानता है।

सूफ़ी साधना

भक्ति आंदोलन इतना व्यापक एवं मानवीय था कि इसमें हिंदुओं के साथ

मुसलमान भी आए। सूफ़ी यद्यपि इस्लाम मतानुयायी हैं, किंतु अपने दर्शन एवं साधना-पद्धति के कारण भक्ति आंदोलन में गणनीय हैं। इस्लाम एकेश्वरवादी है। किंतु सूफ़ी संतों ने 'अनलहक' अर्थात् 'मैं ब्रह्म हूँ' की घोषणा की। यह बात अद्वैतवाद से मिलती-जुलती है। सूफ़ी साधना के अनुसार मनुष्य के चार विभाग हैं– 1. नफ्स (इंद्रिय), 2. अक्ल (बुद्धि या माया), 3. कल्ब (हृदय), 4. रूह (आत्मा)। यह साधना नफ्स और अक्ल को दबाकर कल्ब की साधना से रूह की प्राप्ति पर बल देती है। हृदय-रूपी दर्पण में परम सत्ता का प्रतिबिंब आभासित होता है। यह दर्पण जितना ही निर्मल होगा, रूप उतना ही स्पष्ट होगा, अर्थात् सूफ़ी साधना भी हृदय की साधना है। इसी से वह भक्ति है। आचार्य शुक्ल ने इसीलिए जायसी आदि सूफ़ी कवियों को कबीर, सूर, तुलसी की कोटि में रखा है। यह बात भी महत्त्वपूर्ण है कि सूफ़ी संतों में भी प्राय: निम्न वर्ग के लोग थे और इसमें राबिया जैसी महिला साधिका प्रसिद्ध हैं। मुल्ला दाऊद (1379) हिंदी के प्रथम सूफ़ी कवि हैं। सूफ़ी कवियों की परंपरा उन्नीसवीं शती तक मिलती है। सूफ़ी साधना का प्रवेश इस देश में बारहवीं शती में मोइनुद्दीन चिश्ती के समय से माना जाता है। सूफ़ी साधना के चार संप्रदाय प्रसिद्ध हैं– 1. चिश्ती, 2. सोहरावर्दी, 3. कादरी और 4. नक्शबंदी। हिंदी का सूफ़ी काव्य अवधी भाषा में रचित मिलता है। सूफ़ी मुसलमान थे, लेकिन उन्होंने हिंदू घरों में प्रचलित कथा-कहानियों को अपने काव्य का आधार बनाया। उनकी भाषा और वर्णन में भारतीय संस्कृति रची-बसी है। प्रेम की पीर की व्यंजना इनकी विशेषता है।

अन्य मत

आधुनिक हिंदी क्षेत्र के बाहर पड़ने वाले दो संत कवियों– महाराष्ट्र के नामदेव (13वीं शती) और पंजाब के गुरु नानक (15वीं शती) ने हिंदी में रचनाएँ की हैं। अनुमानत: नामदेव पहले सगुणोपासक थे, बाद में ज्ञानदेव के प्रभाव के कारण नाथ पंथ में आए। इसी कारण नामदेव की रचनाएँ सगुणोपासना और निर्गुणोपासना, दोनों से संबंधित हैं। गुरु नानक का संबंध किसी संप्रदाय से जोड़ना कठिन है। वे दृष्टिकोण में कबीर से काफ़ी मिलते-जुलते हैं, यद्यपि उनका स्वर कबीर जैसा प्रखर नहीं, बल्कि शामक है। ये सिख संप्रदाय के प्रथम गुरु हैं।

इनके अतिरिक्त भी भक्ति के अनेक छोटे-छोटे संप्रदाय हैं, किंतु भक्ति का लक्षण भगवद्विषयक रति, अनन्यता, पूर्ण समर्पण सब में मिलता है। सदाचार, परदुखकातरता, प्राणिमात्र पर करुणा, समभाव, अनावश्यक लौकिक संपत्ति के प्रति

उपेक्षा, अहिंसा आदि का भाव सभी प्रकार के भक्तों में पाया जाता है। इनमें निर्भीकता भी है।

भक्ति का प्रभाव मध्यकाल की सभी सांस्कृतिक गतिविधियों में देखा जा सकता है। इस काल के संगीतकार प्राय: भक्त भी हैं, जैसे स्वामी हरिदास। मूर्ति, चित्र, नृत्य सभी का विषय प्रधानत: भक्ति या भक्त है। विभिन्न कलाओं में राधा-कृष्ण की लीला अत्यंत लोकप्रिय है। कहा जा सकता है कि जिस प्रकार हिंदी साहित्य का भक्तिकाल है, वैसे ही अन्य कलाओं के इतिहास का भी भक्तिकाल होगा।